लोकतंत्र की आत्मा है - संवाद

हरियाणा संवाद

पाक्षिक 1-15 मई 2021 www.haryanasamvad.gov.in अंक-17

"हार और जीत, यह आपकी सोच पर निर्भर है। मान लो तो हार, ठान लो तो जीत।

: गुरु तेग बहादुर

कोरोना से लड़ना है, डरना नहीं 3

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम 5

प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने का अवसर 8

बलिदान-परंपरा का प्रतीक बड़ खालसा

महान् विचारक गुरु श्री तेग बहादुर जी के 400 वें प्रकाशोत्सव पर विशेष

विशेष प्रतिनिधि

हरियाणा के जिला सोनीपत का यह छोटा सा कस्बा बड़-खालसा सिख-इतिहास में विशेष महत्व रखता है। कस्बे के निवासियों को इस बात का गर्व है कि उनके एक पूर्वज भाई कुशाल सिंह (भाई कुशल सिंह) ने नवम् गुरु की सेवा में अनूठा बलिदान दिया था।

यह कस्बा सोनीपत से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर है और भौगोलिक रूप में 257 हेक्टेयर पर बसा है। कुल आबादी लगभग तीन हजार है और मुख्य रूप से यहां दहिया गोत्र के लोग ही बसते हैं।

जिस दिन चांदनी चौक में तत्कालीन आततायी मुगल सम्राट औरंगजेब के आदेश से नवम्-गुरु को शहीद किया गया था, उसी शाम एक भीषण काली आंधी ने दिल्ली के अनेक क्षेत्रों को अपनी चपेट में ले लिया था। आततायी का यह भी हुक्म था कि कोई भी व्यक्ति गुरुजी के शरीर का कोई अंग वहां से न हटाए। मगर आंधी का प्रकोप भी इतना भयावह था कि वहां तैनात मुगलिया-कारिंदों को कुछ भी आसपास दिखाई नहीं दे रहा था।

उस माहौल में गुरुजी के एक श्रद्धालु भाई जैता ने लपक कर उनका कटा हुआ सिर उठाया और गहन अंधेरे में गायब हो गया। लगभग उसी समय लक्खीशाह वनजारा नामक एक अन्य श्रद्धालु ने घटनास्थल पर पहुंचकर गुरु जी का शेष शरीर वहां से उठाया, उसे अपने कपास लादने वाले छकड़े में रूई की गांठों के तले छिपाया और वहां से अपने रायसीना गांव के आवास की ओर चल पड़ा।

भाई जैता को वहां से आनंदपुर साहब की ओर छिपते-छिपते पहुंचना था। मार्ग लम्बा था। स्वाभाविक था, रास्ते में कई स्थानों पर रुकना पड़ा था। उधर, औरंगज़ेब के कारिंदे उसकी तलाश में निकले हुए थे।

अटूट श्रद्धा व समर्पण की यह पराकाष्ठा थी कि उसी गांव के एक श्रद्धालु कुशल सिंह दहिया ने अपने बेटे को आदेश दिया कि वह उसका सिर काटकर मुगल सिपाहियों को सौंप दें ताकि वे दरिंदे भाई जैता का पीछा न कर सकें। वे कैसी परिस्थितियां थीं, जब अपने गुरु या अपनी आन के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने में श्रद्धालु लोग एक पल का भी संकोच नहीं दिखाते थे।

मुगलिया दरिंदे तो उस कटे हुए सिर को लेकर वापिस लौट गए लेकिन वहां जब निशानदेही से पता चला कि वह सिर गुरु तेग बहादुर जी का नहीं था तो क्षुब्ध औरंगजेब के हुक्म से वह पूरा गांव ही तबाह कर दिया गया था। अनगिनत ग्रामवासी मार डाले गए थे। घर जला दिए गए थे और शेष बचे खुचे लोग वहां से पलायन कर गए थे।

कुछ वर्षों बाद पलायनकर्ता लोग गांव में लौट आए। उस गांव का नाम तभी बदल कर रायगढ़ी से पहले कुशल गढ़ी फिर बाद में बड़ खालसा रखा गया। अब इस गांव के लोग हर वर्ष अपने उस अनूठे बलिदानी पूर्वज की स्मृति में विशेष समागम आयोजित करते हैं। उसी स्थल पर जहां भाई जैता, अपने गुरु का कटा हुआ सिर लेकर ठहरे थे, एक स्मृति स्थल भी बनाया गया है। हर वर्ष नगर-कीर्तन का आयोजन भी होता है। नवम् गुरु को 'सबद' के श्रद्धासुमन अर्पित करने के साथ इस अवसर पर भाई कुशल सिंह दहिया व भाई जैता जी को भी पूर्ण श्रद्धा के साथ याद किया जाता है।

हरियाणा सरकार ने गुरु तेगबहादुर जी को समर्पित एक स्मृति स्थल की स्थापना भी इसी स्थान पर की। इसके लिए मुख्य जीटी रोड पर लगभग दो एकड़ भूमि में इस विशिष्ट स्मृति स्थल को मूर्त रूप दिया गया है। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने नवम्बर 2017 में कुशल सिंह दहिया की एक प्रतिमा का भी अनावरण यहीं पर किया था। यद्यपि कुशल सिंह दहिया की वंश-परंपरा में कोई परिजन अब नहीं है लेकिन पूरा का पूरा गांव और इसका हर निवासी स्वयं को उस महान आत्मा का वंशज मानता है।

मालिकाना हक मिलने से बदलेगी नगर निकायों की तस्वीर

हरियाणा सरकार ने नगर निकायों की बंद परिसंपत्तियों के विमुद्रीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए नगर निकायों द्वारा ऐसी दुकानों / मकानों की बिक्री किए जाने के लिए एक नीति लागू करने का निर्णय लिया है, जहां ऐसी संपत्तियों का स्वामित्व नगर निकायों की बजाय अन्य संस्थाओं/ व्यक्तियों या इसके पूर्ववर्ती के पास 20 वर्ष या इससे अधिक की अवधि से है।

यह नीति 'नगर निकायों द्वारा दुकानों/ मकानों की बिक्री के लिए नीति' कहलाएगी। यह नीति सरकार द्वारा अधिसूचित किए जाने की तिथि से लागू होगी, जब तक कि अन्यथा इस नीति में या सरकार द्वारा या तो आम तौर पर या किसी वर्ग या संपत्ति / व्यक्तियों की श्रेणी में प्रदान नहीं किया जाता है।

यह नीति लागू करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि नगर निकायों में दुकानों/ मकानों के रूप में बड़ी संख्या में ऐसी परिसंपत्तियां विद्यमान हैं जो 20 वर्षों से भी अधिक समय से अन्य संस्थाओं या व्यक्तियों के कब्जे में हैं । नगर निकायों को ऐसी परिसंपत्तियों के प्रबंधन में कठिनाई आ रही है क्योंकि अनेक मामलों में ऐसी परिसंपत्तियों का स्वामित्व/कब्जा अनेक बार परिवर्तित हो चुका है और निकायों के पास संबंधित प्रमाणित दस्तावेजों का भी अभाव है। यहां तक कि नगर निकाय बड़ी संख्या में ऐसी संपत्तियों से किराया वसूलने में भी असमर्थ हैं। गहन विचार उपरांत यह निर्णय लिया गया कि ऐसी परिसंपत्तियों का स्वामित्व ऐसे लोगों को ही हस्तांतरित कर दिया जाए जिनके पास वर्तमान में ऐसी परिसंपत्तियों का न्यायोचित कब्जा है। यह नीति न केवल नगर निकायों की वित्तीय स्थिति को मजबूत करेगी बल्कि छोटे दुकानदारों और अन्य पट्टेदारों को उक्त संपत्तियों के स्वामित्व का अधिकार भी देगी।

बिना उचित मार्ग वाली भूमि की राह

मुख्यमंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में 'पॉलिसी फॉर ट्रांसफर ऑफ म्युनिसिपल लेंड बाई चार्जिंग कंसीडरेशन' नामक एक नीति को स्वीकृति प्रदान की गई ताकि नगर निकायों में नगर निकाय या निजी स्वामित्व वाली ऐसी भूमि जहां तक पहुंचने के लिए उचित मार्ग उपलब्ध नहीं है या जहां नगर निकाय की भूमि निजी व्यक्तियों की भूमि से घिरी है, को बेचना संभव हो सके।

यह नीति उन संपत्तियों / व्यक्तियों की श्रेणियों पर लागू होगी, जहाँ निजी व्यक्तियों या संस्थाओं के स्वामित्व वाली भूमि के लिए किसी कारण या अन्यथा कोई सम्पर्क सड़क उपलब्ध नहीं है। यह नीति उन मामलों पर लागू नहीं होगी जहां नगर निगम द्वारा हरियाणा राज्य सरकार या केन्द्र सरकार या किसी अन्य सरकार या संघीय क्षेत्र के किसी विभाग या ऐसे किसी संगठन से बदलना, हस्तांतरण या खरीद जाना प्रस्तावित है जो पूर्णतः या पर्याप्त रूप से केन्द्र सरकार किसी राज्य सरकार या संघीय क्षेत्र सरकार के नियंत्रण में है।

आबकारी नीति

आबकारी नीति 2021-22 में शराब की बिक्री पर कोविड उपकर को समाप्त करने का निर्णय लिया है। सीएल (एल-14 ए) और आईएमएफएल (एल -2) जोन के मौजूदा लाइसेंसधारकों को नीति वर्ष 2021-22 के लिए अपने लाइसेंस को नवीनीकृत करने का विकल्प दिया है। सीएल और आईएमएफएल ज़ोन के लाइसेंसों को वर्ष 2020-21 के लिए 'बेस लाइसेंस फीस/ आनुपातिक लाइसेंस फीस, जैसा भी मामला हो' पर 10 प्रतिशत की वृद्धि के साथ नवीनीकृत किया जाएगा। शेष जोन जिनका नवीनीकरण नहीं किया जाएगा, उनके लिए बोलियाँ आमंत्रित की जाएंगी।

संपादकीय

चलिए थोड़ा गंभीर बनें

परिस्थितियां अनुकूल नहीं हैं, मगर हम गंभीर भी तो नहीं हैं। संवेदनशीलता दिन ब दिन घटती जा रही है। हड़तालें, आंदोलन, धरने, प्रदर्शन आदि कुछ समय के लिए हाशिए पर सरकने का समय है। मुनाफ़ाखोरी छोड़ने का समय है। तथाशुदा 'प्रोटोकॉल' पर सख्ती से अमल का समय है। मगर हम अब भी पुलिस वाले को देखकर मास्क सही ढंग से पहनने का नाटक जारी रखे हुए हैं। दूरी बनाए रखने के बाद कतई गंभीर नहीं हैं और बार-बार हाथ धोना तो वैसे ही हमें अजीब लगता है।

यह स्थितियां अच्छी नहीं हैं। हम आत्मघाती होते जा रहे हैं। बचना है तो इस नौटंकी-नुमा जीवनशैली से बचिए।

एक सुखद बात है कि प्रदेश में फसल कटी भी और बिक भी रही है। 'लॉकडाउन' की नौबत अभी नहीं आई। धंधा, थोड़ा बहुत चल रहा है, भले ही रफ्तार मद्धम है।

अब तो नए शोध यह भी बताने लगे हैं कि छींक आने या सिर्फ़ खांसी या बुखार आने से ही कोरोना नहीं फैलता। अब 'लांसेट' पत्रिका में एक नया शोध छपा है। इसके अनुसार, कोरोना वायरस सबसे ज्यादा हवा के जरिए फैल रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा के छह वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अध्ययन के बाद यह दावा किया है। उनके मुताबिक, इस बात के ठोस और पक्के सबूत मिले हैं। भारत में तेजी से बढ़ते संक्रमण के बीच यह खबर चिंता बढ़ाने वाली है।

प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल लांसेट में प्रकाशित रिपोर्ट में वैज्ञानिकों ने इस दावे को साबित करने के लिए दस कारण भी गिनाए हैं। उनके मुताबिक भीड़ भाड़ वाली जगह, मेला, बाज़ार आदि सुपर स्प्रेडर बन रहे हैं और सावधानियां और स्वास्थ्य सुविधाएं भी इनके आगे लाचार साबित हो रही हैं। इसी साइलेंट ट्रांसमिशन 'मोड' में वायरस हवा के जरिए सबसे ज्यादा फैला है। होटलों में एक-दूसरे से सटे कमरों में रह रहे लोगों के बीच संक्रमण ज्यादा देखा गया है। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया को जल्द इससे बचाव की राह तलाशनी होगी और विश्व स्वास्थ्य संगठन को भी तुरंत इस पर दिशा-निर्देश देने होंगे। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने भी इस शोध की समीक्षा की है और हवा से कोरोना वायरस फैलने की बात को उन्होंने भी प्रमुखता से जगह दी। यह भी कहा है कि बड़े ड्रापलेट से ही कोरोना फैलता है, इसके कोई प्रणाम नहीं।

ऐसी स्थितियों में हमें हर हाल में बचाव के रास्ते अपनाने ही होंगे। अगली पीढ़ी को भी बचाव के रास्तों पर चलने के संस्कार भी हमें ही देने होंगे। स्मरण रहे कि 'सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी'। सोच को सकारात्मक रखें और बचाव के रास्तों पर चलते रहें, इसी में ही कल्याण है, भला है।

- डा चंद्र त्रिखा

पंचकूला के समग्र विकास की तैयारी

पंचकूला के विकास के लिए कुछ और योजनाओं पर विचार विमर्श हुआ है जिनकी वजह से क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं तेजी से बढ़ेंगी। मुख्यमंत्री मनोहरलाल की उपस्थिति में गत दिनों एक विशेष बैठक का आयोजन हुआ जिसमें पंचकूला के विधायक श्री ज्ञानचंद गुप्ता एवं पंचकूला नगर निगम के महापौर श्री कुलभूषण गोयल उपस्थित हुए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचकूला के विकास के लिए सड़क सम्पर्क मजबूत होना अनिवार्य है। लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को इस दिशा में तेजी से कार्य करते हुए निर्धारित समय सीमा में पूरा करने के लिए कहा है। रामगढ़ से हिमाचल प्रदेश को जोड़ने वाली सड़क के लिए भी आवश्यक अनुमति (वन एवं पर्यावरण आदि) जल्द से जल्द लेने के लिए कहा गया।

मुख्यमंत्री ने स्थानीय निकाय विभाग के अधिकारियों को पंचकूला के सेक्टर 23 में ड्रेपिंग ग्राउंड को 31 दिसम्बर 2021 तक खाली कराने के निर्देश दिए।

पंचकूला को मेडिकल हब बनाने की योजना है। इसके लिए संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि पंचकूला में अच्छी सुविधाओं से युक्त बड़े अस्पताल स्थापित हों, इसके लिए अधिकारी योजना बनाएं। अस्पतालों के लिए अच्छी सड़कें और पार्किंग व्यवस्था आवश्यक हैं। पंचकूला में वेलनेस सेंटर और पंचकर्म केंद्र स्थापित करने के लिए कहा गया है।

पिंजौर के विकास पर विशेष ध्यान

पिंजौर के विकास पर व्यापक चर्चा हुई है। यहां बनने वाली फिल्म सिटी के कार्यों में तेजी लाने के लिए कहा गया है। हवाई पट्टी बनाने की दिशा में भी तेजी से काम करने के निर्देश दिए गये ताकि भविष्य में यहां से लोग एयर टैक्सी सेवा का लाभ उठा सकें। पिंजौर की मंडी को भी पंचकूला के समग्र विकास की योजना में शामिल करने के लिए मुख्यमंत्री ने कहा।

पैरा ग्लाइडिंग और ट्रैकिंग का केंद्र बनेगा मोरनी

मोरनी से टिक्कर ताल के बीच पैरा ग्लाइडिंग की जा सकेगी। बताया गया कि अभी आसपास के 10 ग्रामीण युवाओं को पैरा ग्लाइडिंग का बेसिक कोर्स कराया गया है और पांच युवाओं ने एडवांस कोर्स कर लिया है। पैराग्लाइडिंग करने वाले मोरनी से फ्लाई करके टिक्कर ताल में लैंड करेंगे। पर्यटकों को कोर्स कर चुके युवा फ्लाई कराने में मदद करेंगे।

रेवाड़ी में एम्स समेत सात परियोजनाओं को मिली जमीन

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने रेवाड़ी में बनने वाले एम्स के लिए 200 एकड़ जमीन खरीदने की मंजूरी के साथ सात परियोजनाओं के लिए जमीन खरीदने को स्वीकृति प्रदान की है। हाई पावर लैंड परचेज कमेटी बैठक उप मुख्यमंत्री श्री दुष्यंत चौटाला भी उपस्थित रहे।

रेवाड़ी में बनने वाले एम्स के लिए 200 एकड़ जमीन को 40 लाख रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से खरीदने को कमेटी ने हरी झंडी दी है।

इसके अलावा जमीन खरीदने की मंजूरी मिलने से हथीन में बाईपास बनने का रास्ता भी साफ हो गया। इससे हथीन को जाम से मुक्ति मिल सकेगी। इससे हथीन के विकास को भी गति मिलेगी। इसके अलावा कैथल जिले के राजौंद में वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बनाने के लिए भी जमीन मालिकों ने कीमत पर सहमति दी जिसके बाद प्लांट के लिए जमीन खरीदने को मंजूरी दे दी गई।

यमुनानगर जिले में कलानौर से कैल तक चार लेन सड़क मार्ग बनाने के लिए आवश्यक भूमि की खरीद को हरी झंडी दी गई है।

कुरुक्षेत्र जिले के पिहोवा में बीबीपुर से चनलहेड़ी के बीच और सिरसा जिले में रानियां और कुतुब गढ़ के बीच बनने वाले पुल के लिए भी जमीन खरीदने को मंजूरी मिली है।

नूह जिले के आकेरा गांव में यूनानी मेडिकल कॉलेज के लिए 580 मीटर के अप्रोच रोड के लिए जमीन खरीदने को मंजूरी प्रदान कर दी गई।

इन सभी प्रोजेक्ट्स को बनाने के लिए जिन किसानों ने इं भूमि पोर्टल पर अपनी जमीन का ब्यौरा अपलोड किया था, उन्हीं से चर्चा और सहमति के बाद जमीन खरीद को मंजूरी दी गई। सात प्रोजेक्ट्स के लिए 259.07 एकड़ जमीन की लगभग 116.41 करोड़ रुपए में खरीद तय हुई है।

कोविड आपातकालीन ऋण योजना

राज्य सरकार ने प्रदेश में कोविड मरीजों को दवाइयां, ऑक्सीजन एवं अन्य चिकित्सा सुविधाओं की आपूर्ति करवाने वाले नए एवं पुराने उद्यमियों के लिए 'हरियाणा कोविड आपातकालीन ऋण योजना' शुरू की है। इसके लिए सरकार ने 500 करोड़ रुपए का कोष स्थापित किया है।

इस योजना के तहत हरियाणा सरकार वर्तमान में कार्यरत व्यवसायियों को राज्य में उक्त जरूरतों को पूरा करने हेतु अपने चालू उत्पादन को बढ़ाने या नई इकाइयां स्थापित करने में मदद करेगी। यह योजना अधिसूचना की तिथि से लागू होगी और पूरे राज्य में प्रभावी रहेगी।

कोविड महामारी के दौरान ऑक्सीजन, बैडस, वेंटिलेटर इत्यादि उपलब्ध करवाने वाली पहले से काम कर रही इकाइयों को अपने उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिलेगी। यह योजना उद्यमियों को 6 माह तक अतिरिक्त उत्पादन खरीदने की गारन्टी भी प्रदान करेगी, जिसके लिए रेट अनुबंध भी तय किए जाएंगे। इसके साथ ही बैंक द्वारा ऋण पर लिए जाने वाले ब्याज को सरकार द्वारा एक वर्ष तक वहन किया जाएगा। इसके साथ ही नई इकाइयां स्थापित करने में नए अधिसूचित उद्यमियों को भी इस योजना का लाभ मिलेगा। इसके अन्तर्गत सरकारी अस्पतालों या नामित स्थानों पर ऐसी इकाइयां स्थापित करने पर भी सरकार बैंक को ऋण की गारन्टी प्रदान करेगी।

रेडिमेसिविर इंजेक्शन को लेकर सख्ती

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऑक्सीजन की सप्लाई का आबंटन जिस प्रकार से किया गया है उसी अनुपात में जहां जितनी ऑक्सीजन की सप्लाई होनी है, वहां पर समय से वह सप्लाई सुनिश्चित हो, इसके लिए अधिकारी गम्भीरता से कार्य करें। इसके लिए उन्होंने सप्लाई रोस्टर भी बनाने के निर्देश दिए। साथ ही दवाईयों की सप्लाई की व्यवस्था भी सुचारू करने के निर्देश दिए।

कोविड 19 महामारी के गम्भीर मरीजों के लिए उपयोगी रेडिमेसिविर के इंजेक्शन को भी बिना डाक्टर की पर्ची के न दिए जाने की व्यवस्था करने को भी स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को कहा। साथ ही इस इंजेक्शन का रिकॉर्ड रखने को भी कहा। उन्होंने कहा कि इस इंजेक्शन की प्रदेश में रोज एक हजार डोज की आपूर्ति हो रही है।

सलाहकार संपादक : डा. चंद्र त्रिखा
सह संपादक : मनोज प्रभाकर
संपादकीय टीम : संगीता शर्मा, सुरेंद्र मलिक, मनोज चौहान
संपादन सहायक : सुरेंद्र बंसल
चित्रांकन एवं डिज़ाइन : गुरप्रीत सिंह
डिजिटल सपोर्ट : विकास डांगी

प्रदेश में कोविड-19 महामारी की स्थिति को देखते हुए 2021-22 के शैक्षणिक कैलेंडर में 22 अप्रैल से 31 मई तक के लिए गर्मियों की छुट्टियां घोषित की हैं। यह निर्देश सरकारी स्कूलों के साथ निजी स्कूलों पर भी सख्ती से लागू होंगे।

कोरोना से जंग लड़ने के लिए भाप लेना भी अवश्यक है। भाप से खांसी, बंद नाक व सांस लेने में आराम मिलता है। स्वस्थ व्यक्ति को भी दो से तीन बार भाप लेनी चाहिए। इससे फेफड़े सहित श्वास नालियों में रक्त प्रवाह बढ़ता है।

कोरोना से लड़ना है, डरना नहीं

मनोज प्रभाकर

कोरोना संक्रमण कुछ समय शांत रहने के बाद उग्र हो गया है। हालांकि इसके प्रभाव को रोकने के लिए वैक्सीनेशन का कार्य तेजी से हो रहा है लेकिन इसके प्रति सावधानी बरतना बेहतर उपचार माना गया है।

गौर करने वाली बात यह है कि कोरोना का संक्रमण इतना घातक नहीं है जितनी उसकी दहशत। एक अनुमान के मुताबिक संक्रमित पाए जाने वालों में से 99.4 प्रतिशत मरीज ठीक हो रहे हैं। ज्यादा परेशानी केवल उन्हीं संक्रमितों के लिए है जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अन्य रोगों की वजह से कमजोर है। सेहत का ध्यान रखने वाले अधिकांश बुजुर्ग भी स्वस्थ हो रहे हैं। बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है इसलिए उनमें यह संक्रमण ज्यादा असरकारक नहीं है। शहरी क्षेत्र की बजाय गांव देहात में इसका असर बहुत कम है, क्योंकि वहां की जीवन शैली प्रकृति के ज्यादा करीब है।

कोरोना संक्रमित मरीजों के लिए प्रदेश में चौतरफा एहतियाती कदम उठाए गए हैं। जिन मरीजों को कोरोना संक्रमण से अधिक परेशानी नहीं है अर्थात लक्षण बहुत कम हैं, उन्हें होम आइसोलेशन में रखा जा रहा है। हालांकि, जिनके पास घर में आइसोलेशन की व्यवस्था नहीं हैं, उनके लिए 526 जिला कोविड केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों में लगभग 45 हजार बैड की व्यवस्था है। प्रदेश में 281 कोविड अस्पताल हैं, जिनमें लगभग 21 हजार बैड की व्यवस्था है।

राज्य सरकार की ओर से निजी अस्पतालों से अपील की गई है कि वे पहले प्राथमिकता कोरोना के मरीजों को दें। निजी अस्पतालों के लिए कोरोना के ईलाज के खर्च की सीमा 8 हजार से 18 हजार रुपए तक प्रति दिन निर्धारित की गई है।

लॉकडाउन से बचने का प्रयास

लॉकडाउन की चल रही अफवाहों पर विराम लगाते हुए मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि राज्य में लॉकडाउन नहीं लगाया जाएगा। हालांकि, कोरोना से बचाव के लिए सभी तरह के नियमों का सख्ती से पालन अवश्य अमल में लाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने श्रमिकों से आग्रह किया कि वे निश्चिंत होकर अपने कार्य में लगे रहें, किसी प्रकार से घबराने की जरूरत नहीं है। उन्हें किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं आने दी जाएगी। हरियाणा सरकार उनके साथ खड़ी है।

उन्होंने कहा कि पिछले साल लॉकडाउन लगने के कारण अर्थव्यवस्था का चक्र रुकने से कई श्रमिकों को समस्या का सामना करना पड़ा था, लेकिन इस बार मजदूरों और कामगारों विशेषकर दैनिक और मासिक वेतन पर काम करने वालों के हितों को ध्यान में रखते हुए, हरियाणा में कोई लॉकडाउन नहीं लगाया जाएगा।

भीड़ जुटाने की मनाही

सार्वजनिक समारोह में खुले में 200 और इंडोर में 50 से अधिक लोग एकत्र नहीं हो सकेंगे। इसी तरह, अंतिम संस्कार में भी 20 से अधिक लोग शामिल नहीं हो सकेंगे। रात के समय होने वाले शादी समारोहों पर रोक लगा दी गई है। जनसामान्य जरूरत पड़ने पर ही घरों से निकलें और जब भी घर से बाहर निकलें, मास्क, सेनेटाइजर और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। प्रदेश में ऑक्सीजन, वेंटीलेटर और बैड की समुचित व्यवस्था है। इसलिए लोगों को घबराने की आवश्यकता नहीं है।

स्कूलों के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश

हरियाणा शिक्षा बोर्ड की ओर से दसवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षाओं को रद कर दिया गया है तथा 12 वीं कक्षा की परीक्षाओं को स्थगित कर दिया गया है। बतादें दसवीं की परीक्षाएं 22 अप्रैल से तथा 12वीं की परीक्षाएं 20 अप्रैल से प्रारंभ होनी थी। इन परीक्षाओं के बारे में 31 मई के बाद निर्णय लिया जाएगा। फिलहाल राज्य के स्कूलों के लिए 31 मई तक ग्रीष्मकालीन अवकाश कर दिया गया है।

संतुलित भोजन जरुरी

संक्रमण से बचे रहने के लिए संतुलित खानपान बहुत जरूरी है। संतुलित खान पान का तात्पर्य यह नहीं है कि थालीभर का खानपान या सूखे मेवे ही होते हैं। मौसमी सब्जी व फलों का सेवन खानपान को संतुलित बनाता है। इनमें मौजूद पोषक तत्व शरीर की इम्यूनिटी पावर को बढ़ाते है। विशेषज्ञों द्वारा सलाह दी जाती है कि खटास वाले फल बेहतर रहते हैं। जैसे आंवला, संतरा, किनू, मौसमी, पपीता, अंगूर, कीवी, अमरूद, आम आदि। गर्मी के मौसम में अनेक प्रकार की सब्जियां भी उपलब्ध हो गई हैं जिनका सेवन शरीर को संक्रमण से बचाता है।

अध्यात्म के निकट रहें या किताबें पढ़ें

कोरोना से लड़ना है, डरना नहीं है। दरअसल भय एक विज्ञान समत ऐसा कारण है जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करता है। फिर कोई भी संक्रमण शरीर पर हावी होने लगता है। इसलिए इस काल में जरुरी है भयमुक्त रहना। दूसरे शब्दों में कोरोना का उपचार शांत व प्रसन्न रहते हुए उसका क्रम पूरा करना है। इसके लिए अगर अध्यात्म के करीब रहना चाहें तो ठीक वरना अच्छा साहित्य पढ़कर भी इसको आया-गया किया जा सकता है।

ये सावधानी बरतें

- लापरवाही कतई न बरतें। सतर्क रहें। सावधान रहना ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।
- भीड़ भाड़ वाले स्थानों पर न जाएं। बहुत ज्यादा जरुरी हो तो जाएं, मगर पूरी सावधानी के साथ।
- उम्र 18 से ऊपर है तो वैक्सीन लगवाएं। पहली और दूसरी डोज लेने के बाद भी लापरवाह न हों। सावधानी नहीं बरती तो कोरोना संक्रमण हो सकता है।
- सरकारी दिशा निर्देशों का पालन अवश्य करें। जैसे मास्क लगाना, दो गज की दूरी रखना, हाथों की सफाई का ध्यान रखना आदि
- सुबह उठने के बाद और शाम को बिस्तर पर जाने से पूर्व गुनगुना पानी अवश्य पीएं।
- दिन में कम से कम दो बार काढ़ा जरुर लें। सोने से पूर्व च्यवनप्राश का सेवन लाभकारी रहता है।
- फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक्स व अल्कोहल का सेवन न करें।
- घर में रहते हुए नियमित योग व व्यायाम करें।
- कोरोना संक्रमण हो जाता है तो उसे छिपाएं नहीं। और न ही घबराएं। पृथकवास का आनंद लें और चिकित्सक के संपर्क में रहें।

'किसान परिस्थितियों को समझें'

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि आंदोलन करना हर व्यक्ति का संवैधानिक अधिकार है और आंदोलन करने वालों से उनका कोई विरोध भी नहीं है। लेकिन हर काम का अपना समय होता है। इस समय कोरोना के चलते जीवन का संकट हो सकता है, इसलिए आंदोलन करने के लिए यह समय सही नहीं है। मुख्यमंत्री ने किसानों से अपील करते हुए कहा कि मानवीयता के नाते इस समय वे अपना आंदोलन वापस लें।

आयुष चिकित्सक संभालेंगे मोर्चा

स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने कहा है कि कोरोना के गंभीर मरीजों की देखभाल के लिए राज्य के सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों में 'क्रिटिकल कोरोना केयर सैन्टर' बनाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही आयुष विभाग के चिकित्सकों का नियंत्रण संबंधित जिलों के सिविल सर्जन को दिया गया है ताकि कोरोना मरीजों की देखभाल और अच्छी प्रकार से की जा सके। विभाग द्वारा होम आइसोलेशन की किट तैयार करवाई जा रही है, जिसमें दवाइयां, प्लस ऑक्सिमीटर, कोरोना से बचाव संबंधी साहित्य व अन्य आवश्यक सामग्री होगी। इन आयुष किट की सहायता से चिकित्सक घर-घर जाकर कोरोना मरीजों की जांच एवं उपचार करेंगे।

श्री विज ने कहा कि प्रदेश में ऑक्सीजन एवं रेमडेसिविर की कोई कमी नहीं है तथा राज्य के सभी अस्पतालों में रेमडेसिविर की आपूर्ति पर्याप्त मात्र में की जा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में 270 एमटी ऑक्सीजन की मात्रा उपलब्ध है, जबकि राज्य में 60 एमटी की खपत हो रही है। इसके साथ ही प्रदेश में सभी ऑक्सीजन प्लांटों पर पुलिस व औषध नियंत्रक प्रशासन को निगरानी रखने के आदेश दिए ताकि किसी भी प्रकार की कालाबाजारी न हो सके।

शरीर में आक्सीजन का स्तर सही रखने के लिए जितना हो सके उल्टा यानी पेट के बल लेट कर गहरी श्वास लेनी चाहिए। ऐसा दिन में कई बार कर सकते हैं। मानसिक तनाव व भारी खान पान आक्सीजन की आवश्यकता को बढ़ा देता है, उसे बचें।

कोरोना काल में आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स व अन्य शीतल पेय तथा मैदे से बनी चीजें, बाजार का खाना फास्ट फूड जैसे बर्गर, चाऊमिन, पिज्जा वगैरह खानों से परहेज रखें। धूम्रपान व अल्कोहल का सेवन न करें।

धान की फसल से बनाएं दूरी जल संरक्षण जरुरी

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि जल संरक्षण के उद्देश्य से शुरू की गई 'मेरा पानी मेरी विरासत' योजना के तहत प्रदेश सरकार ने किसानों से धान के स्थान पर अन्य वैकल्पिक फसलों की बुआई करने का आह्वान किया था और किसानों ने 96 एकड़ भूमि पर धान के अलावा अन्य फसलों की बिजाई की है। योजना के तहत किसानों को 7 हजार रुपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन के रूप में दिए गए हैं। इस बार भी सरकार किसानों से आग्रह करेगी कि वे लगभग 2 लाख एकड़ जमीन पर धान की बिजाई के अलावा अन्य फसलों की बिजाई करें ताकि पानी की बचत हो सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले भूमि मालिक को ही मुआवजा या फसल बिक्री का पैसा मिलता था, लेकिन वर्तमान प्रदेश सरकार ने यह प्रावधान किया है कि मालिक के अलावा जो काश्तकार है उसको यह पैसा मिलेगा। इसका बड़ा लाभ हुआ है।

2022 तक किसानों की आय दोगुना

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में कार्य कर रही है। कोरोना महामारी के बावजूद भी हर प्रकार से ऐसा सिस्टम बनाया जाएगा कि किसानों की आमदनी दोगुनी हो।

उन्होंने कहा कि कुछ लोग किसानों को भ्रम में डाल देते हैं कि कुछ चीजें उनके अहित में हैं। इस भ्रम को दूर करने के लिए भी व्यवस्थाएं बनाई जा रही हैं। किसान के ऊपर किसी प्रकार का दबाव डालकर कोई चीज मनवाने का इरादा न तो केंद्र सरकार का है और न ही हरियाणा सरकार का।

किसान मित्र योजना

श्री मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश सरकार छोटी जोत के किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि आय बढने के साथ-साथ किसानों का वित्तीय प्रबंधन सही हो इसके लिए सरकार 'किसान मित्र योजना' लाएगी। इसके तहत एक व्यक्ति स्वैच्छिक रूप से आगे छोटे किसानों को वित्तीय प्रबंधन के बारे में बताएगा। इसके लिए ऐसे लोगों का वॉलंटरी रजिस्ट्रेशन करवाया जाएगा।

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजन

मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश सरकार 'मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना' के नाम से एक अनूठी योजना लेकर आई है। इसके तहत परिवार पहचान पत्र (पीपीपी) से प्रदेश के सबसे कम आय वाले 1 लाख परिवारों को चयन किया जाएगा और उन्हें गरीबी रेखा से ऊपर उठाकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जाएगा। इसके लिए राज्य सरकार ऐसे परिवारों के सदस्यों के कौशल विकास पर जोर देगी, बेरोजगार सदस्यों को रोजगार के अवसर मुहैया करवाने की दिशा में कार्य करेगी।

मनोहर लाल ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि किसी समाज को यदि सुखी करना है तो सबसे आवश्यक है कि उस समाज का जो आखिरी सिरे पर खड़ा व्यक्ति है, उसका जीवन सुधारा जाए। इसके बाद ही सूखी समाज की कल्पना की जा सकती है। अंत्योदय की इसी भावना के साथ हरियाणा सरकार आगे बढ़ रही है।

टयूबवेल कनेक्शन जारी करने के निर्देश

हरियाणा सरकार द्वारा बिजली वितरण निगमों को टयूबवेल कनेक्शन जारी करने के निर्देश दिए हैं। इसी श्रृंखला में उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम द्वारा पहले चरण में, वर्ष 2020-21 में 4221 टयूबवेल कनेक्शन जारी किए जा चुके हैं। अब दूसरे चरण में सभी नौ सर्कलों (अंबाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक और झज्जर) में लगभग 16635 उपभोक्ताओं को टयूबवेल कनेक्शन जारी किये जायेंगे।

हैफेड बाजार के बढ़ते कदम

हैफेड के उत्पादों की बढ़ती मांग के मदेनजर राज्य में हैफेड के आउटलेटस में बिक्री बढ़ रही है। गत 12 अप्रैल व 13 अप्रैल को 10 लाख रूपए प्रतिदिन हिसाब से हैफेड उत्पादों की बिक्री दर्ज की गई है। अक्तुबर, 2020 से दिसंबर, 2020 तक औसतन 3.71 लाख रूपए प्रतिदिन की बिक्री दर्ज की गई थी।

विभिन्न रणनीतिक कदमों के तहत हैफेड के आउटलेट में बिक्री की बढ़त दर्ज की गई है। इन उठाए गए कदमों के अंतर्गत उत्पादों की श्रृंखला को बढाया गया है और नए उत्पादों की शुरूआत भी की गई है जिनमें दालें, बाजरा और ज्वार के बिस्कुट, पोहा, व्हीट ब्रान, गुड़ इत्यादि शामिल हैं। इसके अलावा, राज्य में हैफेड के आउटलेटस को कम्प्यूटरीकृत किया गया है और इन आउटलेटस में ई-बिलिंग, पीओएस की सुविधा दी गई ताकि उपभोक्ता किराना खाद्य उत्पादों को आसानी से खरीदने में सक्षम रहें।

सहकारिता मंत्री ने बताया कि हैफेड आउटलेट अब 10 घंटे रोजाना सुबह 9.30 बजे से शाम 7.30 बजे तक खुले रहते हैं। जहां पर व्यापक श्रेणी के अच्छे उत्पादों की खरीद के लिए ग्राहकों को अवसर प्रदान किया जाता है। उन्होंने बताया कि मौजूदा छोटे आउटलेट की बिक्री की मात्रा में वृद्धि से प्रेरित, हैफेड ने लगभग 1000 वर्ग फीट क्षेत्र के 'हैफेड बाजार' नामक सेल आउटलेट खोलने का फैसला किया है और राज्य में सभी जिला मुख्यालयों पर कम से कम एक 'हैफेड बाजार' खोला जाएगा।

फूड प्रोसेसिंग में अच्छी आमदनी ले सकते हैं किसान

किसान को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए केवल अनाज उत्पादन तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि फूड प्रोसेसिंग भी अपनाना होगा। फूड प्रोसेसिंग अपनाकर किसान अच्छी-खासी आमदनी ले सकते हैं। इस प्रकार किसान प्रगतिशील सोच को अपनाकर ही आर्थिक खुशहाली की ओर अग्रसर हो सकते हैं ।

कृषि एवं पशुपालन मंत्री जेपी दलाल का कहना है कि पंजाब व हरियाणा के 75 फीसदी किसानों के पास पांच एकड़ से कम जमीन है और उनमें भी 70 फीसदी से अधिक किसान गेहूं व धान के परंपरागत फसलचक्र में फंसे हुए हैं। इस चक्र के विपरीत सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा की भावांतर योजना के तहत सरकार किसानों को सब्जियों के भाव बाजार से कम होने पर भाव के अंतर की भरपाई कर रही है। धान जैसी पानी की अधिक खपत वाली परंपरागत फसल के चक्र से किसानों को मक्का की खेती की ओर बढ़ाने के लिए 7000 रुपए प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि दी जा रही है।

उन्होंने कहा कि सरकार किसानी के ऐसे नए प्रयोगों को बढ़ावा देना चाहती है जिससे किसान की आय वृद्धि के नए तरीके और नए मॉडल विकसित हो सकें। उन्होंने कहा कि छोटी जोत के किसानों के लिए मधुमक्खी पालन वरदान है। हरियाणा किसान आयोग की 2017 की एक रिपोर्ट मुताबिक राज्य के करीब 5000 गांवों के किसान सालाना 4000 टन शहद उत्पादन कर रहे हैं। सालाना 50 लाख रुपए के शहद का कारोबार करने वाले यमुनानगर के एक छोटे से किसान का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 28 मार्च को 75-वीं 'मन की बात' में जिक्र कर देश के किसानों को उद्यमशीलता की ओर बढाने का संदेश दिया है।

राज्य सरकार की ओर से किसानों को शहद उत्पादन, प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और मार्केटिंग की ट्रेनिंग और उपकरणों की खरीद के लिए 50 फीसदी तक सब्सिडी दी जा रही है। हरियाणा सरकार यमुनानगर में जल्द ही शहद मंडी भी शुरु करेगी।

रिटेल में आगे आएं किसान

कृषि मंत्री का कहना है कि खेत से खाने की थाली तक एक किसान और आखिरी उपभोक्ता के बीच खाद, बीज, कीटनाशक, कृषि उपकरण कंपनियां समेत प्रोसेसर, पैकेजिंग, ट्रांसपोर्टर्स, होल-सेलर्स, रिटेलर्स और रेहड़ी-फड़ी वालों मिलाकर करोड़ों कारोबारी आगे बढ़ रहे हैं तो धरती पुत्र किसान आगे क्यों नहीं बढ़ सकता? उपज के बदले में किसान को लागत पर कुछ कमाई होती है पर प्रोसेसिंग कंपनियां और उनके डीलर्स आखिर उपभोक्ता को बेच कर अधिक मुनाफे में हैं। आलू, टमाटर, मक्का से किसान को लागत पर 30 फीसदी तक कमाई हो सकती है जबकि इन्हीं उपज की चिप्स, चटनी और पॉपकॉर्न के रुप में प्रोसेसिंग करने वाले उद्यमियों का मुनाफा 300 फीसदी तक है। किसानों से 10 रुपए प्रति किलो खरीदा गया आलू चिप्स बनकर आखिरी उपभोक्ता तक 300 रुपए किलो बिक रहा है। उत्पादक (किसान)और उपभोक्ता के बीच की खाई में जो मुनाफा बिचौलिए उद्यमी पा रहे हैं, वह किसान भी कमा सकता है, यदि वह खुद को प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और मार्केटिंग के लिए भी तैयार कर ले यह तभी संभव हो सकता है।

कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे प्रदेश के किसानों को पुरानी दरों पर खाद-उर्वरक मुहैया कराना सुनिश्चित करें।अधिकारी अपने मोबाईल नम्बर भी किसानों के साथ सांझा करें ताकि जरूरत पड़ने पर किसान उनसे संपर्क कर सकें ।

दीनबंधु छोटूराम ताप विद्युत स्टेशन की 300 मेगावाट यूनिट-1 ने 19 अप्रैल को लगातार 145 दिन का सफल संचालन कर नया आयाम स्थापित किया है। मार्च में 86.32 फीसद का मासिक संयंत्र लोड कारक हासिल कर सर्वोत्तम स्थान पाया।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

मनोज प्रभाकर

हरियाणा की नई उद्यम एवं रोजगार नीति राज्य की औद्योगिक प्रगति को आगे बढ़ाएगी। राज्य सरकार ने राज्य में एक लाख करोड़ रुपए का निवेश आकर्षित करने और पांच लाख रोजगार सृजित करने का लक्ष्य रखा है। राज्य द्वारा पहचान किए गए विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देने के लिए हरियाणा कृषि-व्यवसाय एवं खाद्य प्रसंस्करण नीति, हरियाणा लॉजिस्टिक्स, भंडागार एवं खुदरा नीति, हरियाणा टेक्सटाइल नीति और हरियाणा फार्मास्युटिकल पॉलिसी जैसी विशिष्ट नीतियां लागू की गई है।

सरकार ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों पर विशेष बल देते हुए सूक्ष्म लघु मध्यम नीति (एमएसएमई) 2019 लागू की है। जो हरियाणा में गुणवत्तापूर्ण क्लस्टर विकास पहलों, घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार विकास, ऑन लाइन मार्केट लिंकेज और एमएसएमई की निर्यात तत्परता को बढ़ाने, उद्यमशीलता को बढ़ावा देने और कौशल विकास में सक्षम है।

राज्य एमएसएमई के संस्थागत सहयोग को और मजबूत करने के लिए एक निदेशालय की स्थापना की गई है जो हरियाणा के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों एवं व्यापारियों के विकास और उन्नति के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेगा।

निदेशालय एयरोस्पेस एवं रक्षा, खिलौना उद्योग, सेवा क्षेत्र, निर्माण एवं औद्योगिक पार्क में हरियाणा की उपस्थिति को मजबूत करने की दिशा में कार्य करेगा, जिसके चलते हरियाणा भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहल में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में अग्रणी राज्य बनेगा।

खरखौदा के निकट लगभग 3,300 एकड़ भूमि पर एक अत्याधुनिक औद्योगिक एवं वाणिज्यिक टाउनशिप और सोहना में लगभग 1400 एकड़ भूमि पर औद्योगिक मॉडल टाउनशिप विकसित किये जा रहे हैं। ये टाउनशिप गुरुग्राम-सोहना-अलवर राजमार्ग को जोड़ने वाले केएमपी एक्सप्रेसवे के निकट होंगे। नंगल चौधरी, नारनौल में 886.78 एकड़ क्षेत्र पर 4000 करोड़ रुपए के निवेश के साथ एक इंटीग्रेटिड मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब को पीपीपी मोड में उत्तर भारत के सबसे बड़े लॉजिस्टिक हब के रूप में विकसित किया जा रहा है।

मेसर्स एटीएल द्वारा आईएमटी सोहना में 7083 करोड़ रुपये के निवेश और 7000 रोजगार सृजित करने की क्षमता वाला एक मेगा प्रोजेक्ट स्थापित किया जा रहा है, जिसके लिए एचएसआईआईडीसी ने 178 एकड़ भूमि आवंटित की है। कम्पनी की आगामी कुछ वर्षों में स्मार्ट फोन, दो एवं तिपहिया ई-वाहनों सहित उद्योगों के लिए बैटरियों की आपूर्ति करने हेतु 7000 करोड़ रुपये के निवेश की योजना है।

राज्य की अनुकूल नीतियों ने लगातार हरियाणा को निवेशकों के लिए भरोसेमंद गंतव्य स्थल बनाया है। वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान हस्ताक्षरित 495 समझौतों मे से 188 समझौते 24,051 करोड़ रुपए के निवेश के साथ क्रियान्वित किये गये हैं। या प्रक्रियाधीन है और 32,030 लोगों के लिए रोजगार का सृजन हुआ है।

अनाधिकृत क्षेत्रों में कारखानों को नियमित करने के निर्देश

अनाधिकृत क्षेत्रों में चल रहे उद्योगों को रेगुलर करने की तैयारी शुरू हो गई है। एचएसआइआइडीसी, इंडस्ट्रीज, स्थानीय निकाय विभाग और हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के अधिकारियों की गत बैठक में यह निर्णय हुआ। मुख्यमंत्री मनोहरलाल की अध्यक्षता में हुई बैठक में डिप्टी सीएम भी उपस्थित रहे।

इस सम्बंध में अब तक यमुनानगर, फरीदाबाद, पानीपत और रोहतक में उद्योगों का सर्वे किया गया है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार यमुनानगर में कुल 4742 उद्योग हैं। इनमें से 1413 कंफर्मिंग जोन में जबकि 3329 नॉन कंफर्मिंग जोन में हैं।

वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के साथ समझौता

हरियाणा सरकार के नई पहलों और माध्यमों से निवेश आकर्षित करने व व्यापार को बढ़ावा देने के प्रयासों के मद्देनजर हरियाणा राज्य औद्योगिक एवं अवसंरचना विकास निगम ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह एमओयू डब्ल्यूटीसी की मदद से राज्य में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निवेश विशेष रूप से औद्योगिक एस्टेट, फरीदाबाद से लाने के लिए किया गया है।

एचएसआईआईडीसी के प्रबंध निदेशक श्री अनुराग अग्रवाल ने बताया कि एचएसआईआईडीसी और डब्ल्यूटीसी ने महसूस किया है कि हरियाणा में व्यापार व निवेश को बढ़ावा देने और सुविधा प्रदान करने की काफी गुंजाइश है। डब्ल्यूटीसी के वैश्विक नेटवर्क के माध्यम से निवेश को यहां लाया जा सकता है, जिससे राज्य में औद्योगिक अवसर बढ़ेंगे।

डब्ल्यूटीसीए बोर्ड की सदस्य खैर-उल-निसा ने एचएसआईआईडीसी के साथ एमओयू करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि डब्ल्यूटीसी अतीत की सफलता की कहानी (नोएडा में) हरियाणा के लिए भी दोहराएगा।

गुरुगाम में ही होगा बिजली संबंधी समस्याओं का समाधान

गुरुग्राम के उद्यमियों की बिजली संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए गुरुग्राम में ही 'फ्रंट ऑफिस' स्थापित किया जाएगा। यहां के मामले हिसार स्थित दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम के मुख्यालय पर नहीं भेजे जाएंगे। लोक निर्माण विश्रामगृह में गुरुग्राम जिला की विभिन्न इंडस्ट्रीयल एसोसिएशनों के साथ हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया।

बिजली मंत्री रणजीत सिंह ने कहा कि गुरुग्राम, फरीदाबाद और धारूहेड़ा औद्योगिक हब हैं जहां से बिजली कंपनियों को राजस्व मिलता है, इसलिए बिजली निगम भी उद्यमियों की समस्याओं का हरसंभव समाधान करने का प्रयास करेगा। उन्होंने कहा कि सप्ताह में एक दिन दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम के प्रबंध निदेशक या उनका प्रतिनिधि और 15 दिन में वे स्वयं उद्योगों को बिजली आपूर्ति की समीक्षा गुरुग्राम में करेंगे। उन्होंने उद्यमियों को विश्वास दिलाया कि वे उनकी बिजली संबंधी समस्याओं को समझ चुके हैं और अब उनका समाधान करवाने की दिशा में काम होगा। उन्होंने यह भी कहा कि अगले तीन महीनों में गुरुग्राम में बिजली संबंधी शिकायतों के निपटारे (ग्रीवेंस रिड्रेसल सिस्टम) में सुधार किया जाएगा। आधी से ज्यादा समस्याओं का समाधान अगले एक महीने में ही हो जाएगा, जिसे उद्यमी स्वयं महसूस करेंगे।

ई-मेल के माध्यम से मिलेंगे बिजली बिल

उद्योगों के बिजली बिल ई-मेल के जरिए भेजे जाएंगे जिनकी अदायगी करने के लिए उन्हें 7 कार्य दिवस दिए जाएंगे, जिसमें वे दिन शामिल नहीं होंगे जिन दिनों में बैंकों का अवकाश होता है। उद्यमियों की मांग पर बिजली मंत्री ने कहा कि उद्योग में कितनी बिजली की खपत हुई, कितना बिल भरा गया आदि से संबंधित डाटा ऑनलाईन उपलब्ध करवाया जाएगा। इसके लिए कॉमर्शियल लॉकबुक ऑनलाईन बनाई जाएगी जहां से उद्यमी अपने उद्योग का बिजली संबंधी डाटा देख पाएंगे। ऐसा करने से उद्योगों को पिछली बकाया राशि लंबित होने के नाम पर एक दम से ज्यादा राशि का बिल मिलने की समस्या का समाधान होगा। उन्होंने यह भी कहा कि बिजली निगम या हरियाणा बिजली नियामक आयोग (एचईआरसी) द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले सर्कुलर भी औद्योगिक एसोसिएशनों को भेजे जाएंगे ताकि उन्हें नियमों की पूरी जानकारी रहे। गुरुग्राम में नियुक्त बिजली अधिकारियों की अगले तीन महीनों में परफॉर्मेंस देखी जाएगी, जो काम नहीं करेंगे, उन्हें यहां से बदल दिया जाएगा।

पंचायत चुनाव के लिए वार्डबंदी का काम अंतिम चरण में पहुंच गया है। वार्डों की सूचियां सार्वजनिक करने के बाद आम जन इस पर अपने सुझाव और सहमतियां देंगे। 20 मई तक वार्डबंदी को अंतिम रूप दे दिया जाएगा।

अंबाला शहर और अंबाला छावनी। अंबाला को आमों की अधिकता और मां अम्बालिक के नाम से जाना जाता है। अंबाला को अम्बवाला, मिक्सी सिटी और विज्ञान नगरी के नाम से भी संबोधित किया जाता रहा है।

पंचकूला से होगा 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2021' का आगाज़

'खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2021' के चौथे संस्करण का आयोजन हरियाणा के पंचकूला, अंबाला, शाहबाद तथा दिल्ली व चंडीगढ़ में 21 नवंबर से 5 दिसंबर, 2021 तक किया जाएगा, जिनमें अंडर-18 कैटेगरी के खेल आयोजित किए जाएंगे। साथ ही, ब्रिक्स गेम्स 2021 के कुछ खेलों का भी आयोजन खेलो इंडिया के साथ करवाया जाएगा। ब्रिक्स देशों में ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन तथा दक्षिण अफ्रिका शामिल हैं।

हरियाणा के मुख्य सचिव श्री विजय वर्धन की अध्यक्षता में खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2021 के लिए गठित कार्यकारी समिति की पहली बैठक में यह निर्णय लिया गया। सत्य नारायण मीणा, सीनियर डायरेक्टर, खेलो इंडिया, भारतीय खेल प्राधिकरण वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

मुख्य सचिव ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि इन खेलों के आयोजन से संबंधित आधारभूत संरचना के निर्माण कार्यों में तेजी लाई जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि खेलो इंडिया गेम्स के लॉन्च समारोह का आयोजन कोविड-19 के नियमों की अनुपालना करते हुए किया जाए। इस समारोह में प्रतिष्ठित खिलाड़ियों व जिन राज्यों के पारंपरिक खेलों का प्रदर्शन किया जाएगा, उन राज्यों के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया जाएगा। इसके साथ ही, ब्रिक्स देशों के उच्चायुक्तों को भी इस समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाए।

प्रतियोगिता में 25 प्रकार के खेल होंगे

ओएसडी, खेलो इंडिया श्री पंकज नैन ने बताया कि हरियाणा में होने वाले इन खेलों में 25 प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाएगा, जिनमें पाँच पारंपरिक खेल जैसे गतका, कलारीपयट्टू, थांग-ता, मलखंभ और योग शामिल हैं। इन खेलों में देश व विदेशों से खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। उन्होंने बताया कि 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स -2021' में लगभग 8500 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। इसके अलावा, स्पोर्टस एक्स्पो भी आयोजित किया जाएगा। इन खेलों का आयोजन हरियाणा सरकार और भारतीय खेल प्राधिकरण (साई), युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

जल्द ही खेलो इंडिया गेम्स के लॉन्च समारोह का आयोजन भी किया जाएगा। इसके अलावा, 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स -2021' के चौथे संस्करण का शुभारंभ कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि खेलों के आयोजन के लिए बहुउद्देशीय हॉल, मैदान, ट्रैक इत्यादि के मरम्मत और नव निर्माण का कार्य तेजी से किया जा रहा है। खिलाड़ियों के ठहरने व खाने-पीने के उचित प्रबंध किए जा रहे हैं।

-संवाद ब्यूरो

ओलंपिक में हरियाणवी पहलवानों रहेगा दबदबा

कजाकिस्तान में चल रहे एशियन ओलंपिक क्वालीफायर में सोनीपत की रहने वाली सोनम मलिक ने 65 किलो वर्ग में ओलंपिक का टिकट पक्का कर लिया है। सोनम ने 19 साल की उम्र में ओलंपिक क्वालीफाई किया वहीं अंशु ने 19 साल 8 महीने की उम्र में ओलंपिक टिकट कटाया है।

अभी तक के क्वालिफाई मुकाबलों में जगह बनाने वाले सभी छह पहलवान हरियाणा से संबंध रखते हैं। अभी तक के जिन 6 पहलवानों ने क्वालिफाई किया है उनमें तीन महिला पहलवान शामिल है। विनेश फोगाट पहले ही ओलंपिक का टिकट पक्का कर चुकी हैं।

म्हारी संस्कृति म्हारे गीत

किसी भी समाज की संस्कृति एवं लोक साहित्य वहां की प्राणदायिनी शक्ति होती है। हरियाणा प्रदेश अपनी भाषा, बोली व सांस्कृतिक गीतों के लिए प्रसिद्ध है। लोकमानस की अभिव्यक्ति जिस व्यापकता के साथ लोकगीतों में उभरती है अन्यत्र कहीं नहीं उभरती ।

किसी भी प्रदेश में अधिकतर लोकगीत महिलाओं द्वारा ही गाए जाते हैं। तीज-त्योहार तो लोकगीतों बिना अधूरे ही जान पड़ते हैं। हरियाली तीज पर औरतें पींग पर झूलते हुए अपनी भावनाएं कुछ ऐसे व्यक्त करती हैं -

सात जणीयों का हे मां मेरी झुलणा जी
पड़या पिंजोला हरियल बाग म्है जी।

इन्हीं झूलों के लिए बहुएं अपनी सासू से रेशम की जेवड़ी तथा चन्दन की पाटड़ी तैयार करवाने की प्रार्थना करती हैं।

आ री सासड़ आई सामणिया री तीज
सीढी घड़ा दे चन्दन रूख की री।

सावन महीने में हरियाली तीज के अवसर पर कोथली सिंधारों की भी शुरुआत होती है। भाई अपनी बहन के यहां कोथली ले जाने से पहले अपनी मां से कहता है- मीठी तो कर दें मेरी मां कोथली री, जावा बाहण कै देस री।

सावन के बाद फागुन भी ऐसा महीना है जिसमें लोकगीत गाये जाते हैं। फागण में होली सहित पूरे महीने उत्सवों की धूम रहती है। 'होली का' डांडा गडते ही गांव में उत्सव का माहौल शुरू हो जाता है। युवा, बच्चे व अधेड़ पारम्परिक खेलों सहित गीत रागणी गाते हैं। गांव की महिलाएं होलीका पर गोबर से बनाये बड़कल्ले डाल कर होलीका की पूजा करती हैं। एक गीत की बानगी देखिए -

"इब्बैक पक्क म आइये फागण मास म्है चमन,
होली खेल्लैं चन्द्र के प्रकाश म्है चमन।

हरियाणा में सामण, फागण महीने के बाद सबसे अधिक लोकगीत विवाह के अवसर पर ही गाए जाते हैं। ब्याह भेजने और ब्याह आने के साथ ही गीत गायन शुरु हो जाता है। फिर भात न्योतने के समय 'भात' गाया जाता है। फिर 21, 17 या 11 दिन का लगन जाता है। इसमें प्रत्येक रात महिलाओं का गायन चलता है। फिर 7, 9 या 5 दिन पूर्व बान या 'बानी' बैठाया जाता है। रात में बनवारे निकाले जाते हैं। शादी के दिन घुड़चढ़ी, बारौठी, फेरो पर सीठणे, विदाई गीतों का गायन चलता है। ब्याह के चुनिंदा गीतों की बानगी भर देखिए-

बीबी की दादी रानी दादा जी तै अरज करै
बिटियां की मां बाबुल तै अरज करे।
बिटिया इसे घर दियो जी पलंग पै बैठी राज करै।
साथण चाल पड़ी रे म्हारे डब डब भर आये नैन।

जहा एक ओर कन्या की विदाई से उदासी छा जाती है तो दूसरी ओर नववधू के आँगन में कुछ इस तरह का मंगलगान होता है-

डोले तै तलै उतर आऐ हे बहुहड़ करकै नीची नाड़
मेरे बेटे की बेल बढाईये जाम्मे हे राजकुमार।

पनघट औरतों की सबसे पंसद की जगह रही है। पनघट पर गांव की नई बहुओं का आपस में तालमेल बढ़ता है। सजी संवरी औरतों को पनघट पे जाते देख कहा जाता है-

गोरी म्हारे गाम की ज्यब नीर भरण चाली
बिजली सी पाड़ी धरती धलक धलक हाली।

कोई पणिहारी को देख कर गा उठता है -

पाणी आली पाणी प्यादें, क्यूं ठा कै डोल खड़ी होगी
के कुएं का नीर सपड़ग्या क्यों अणबोल खड़ी होगी।

पणिहारी उसको पहचान कर कहती है-

कुए पै लुगाइयां धौरै काम के फकीर का
फिरै सै भकाया मोह्ने चौकस किसे बीर का।

हरियाणा अपने पहनावे, खान-पान के लिए प्रख्यात है। स्त्रियों के पहनावे में घाघरा/ दामण, कुर्ता व चुनरी शामिल है, लेकिन लोकगीतों में घाघरे/दामण की चर्चा अधिक होती है।

मेरा दामण ऐ सिमा दे हो, ओ नणदी के बीरा,
तनै न्यू, तनै न्यू ढूंगे पे राखू हो, ओ नणदी के बीरा।

खान पान पहनावे के गीतों के साथ साथ देवी देवताओं की पूजा-अर्चना व भजन आदि को भी महत्व दिया जाता है। हरियाणवी अविवाहित कन्याएं कार्तिक महीने में ब्रह्ममूर्त में स्नान कर तुलसी की पूजा- अर्चना के समय ये गीत गाती है-

तुलसीमाता तै सुख दाता
बिडला सींजूं तेरा, तै कर निस्तार मेरा।

हरियाणा के लोक साहित्य की आमिट छाप यहां के जनमानस पर आज भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विभिन्न अवसरों पर महिलाएं व पुरुष इन लोकगीतों को गुनगुनाते रहते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि लोकगीतों में जनहित की भावना छिपी होती है इसलिए इन गीतों की आज न केवल प्रासंगिकता है बल्कि जरुरत भी है।

-सुरेंद्र बांसल

हरियाणवी संस्कृति में नृत्य का विशेष स्थान है। खोड़िया नृत्य लड़के के विवाह पर बारात के प्रस्थान के बाद महिलाएं करती हैं। डोगरी में इसे नृत्य-नाट्य कहते हैं। ब्रज में खोइया, उत्तर प्रदेश में नकटौरा और कुमाऊं में रतेली कहा जाता है।

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान की मूल स्थापना 1923 में बंगलौर में इम्पीरियल इंस्टीट्यूट ऑफ एनिमल हस्बैंडरी एंड डेयरिंग के रूप में हुई। 1936 में इसे विस्तार देकर इम्पीरियल डेयरी संस्थान नाम दिया। आज मुख्यालय जिला करनाल में है।

स्मार्ट क्लासरूम से विद्यार्थी बन रहे स्मार्ट

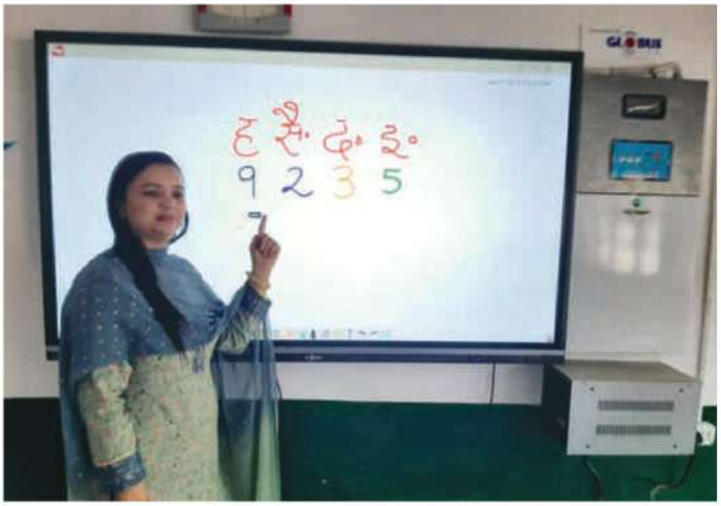

मनोज चौहान

प्रदेश में परंपरागत शिक्षा का ढांचा बदल रहा है। बच्चे क्रियात्मक और संवादात्मक शिक्षा के माहौल में स्मार्ट बन रहे है। स्मार्ट क्लास में एनीमेशन और ऑडियो-विजुअल के रूप मे तैयार पाठ्य' म ने विद्यालय, महाविद्यालय व शिक्षण संस्थानो को रोचक बना दिया है। इस पद्धति ने शिक्षकों को भी पढ़ाने का आसान व डिजिटल मंच प्रदान किया है।

प्रदेश के सरकारी स्कूलों में अब परंपरागत ब्लैक बोर्ड का स्थान स्मार्ट बोर्ड ले रहा है। सरकारी स्कूल अब प्राइवेट स्कूलो की दौड़ में खड़े नज़र आते है। अब नर्सरी कक्षा से इंग्लिश माध्यम में पढ़ाई कराई जाती है। यही वजह है कि राजकीय स्कूलों में बच्चों की संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।

हरियाणा सरकार ने शिक्षा व स्कूलों की स्थिति में सुधार के लिए सार्थक प्रयास किये। सरकार द्वारा प्रदेश के 1493 प्राइमरी स्कूलों को बैग फ्री व इंग्लिश मीडियम, 137 सीनियर सेकंडरी स्कूलों को संस्कृति मॉडल स्कूल बनाया और सीबीएसई बोर्ड से मान्यता दिलाई है।

स्मार्ट बोर्ड ने बदला, कक्षा का स्वरूप

नई शिक्षा पद्धति ने शिक्षा को नए आयाम पर पहुंचाया है। पंचकूला, संस्कृति मॉडल प्राइमरी स्कूल के कॉर्डिनेटर असिंद कुमार ने कहा कि स्मार्ट बोर्ड ने कक्षा के वातावरण को फ्रेंडली बनाया है। बोर्ड पर चित्रों और वीडियो के माध्यम से विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है। विद्यार्थी भी ऐसे में जल्द समझ जाते हैं और याद रखते हैं।

स्मार्ट बोर्ड ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार से काम करता है। इसमें एक कैमरा लगा है। कैमरे द्वारा विद्यार्थियों के पाठ्य' म को एलईडी पर डिस्प्ले किया जाता है। शिक्षक जो पाठ कक्षा में पढ़ाता है। स्मार्ट बोर्ड में उसे रिकॉर्ड करने का प्वॉइंट दिया है। जो विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित नहीं हुए, उन्हें रिकार्ड्स वीडियों को दिखाया या ई-मेल भी किया जा सकता है।

विद्यार्थियों को निःशुल्क टेबलेट मिलेंगे

शिक्षा मंत्री कंवरपाल गुर्जर ने कहा कि स्मार्ट क्लासरूम एक अनूठी पहल है जिसके भविष्य में सार्थक परिणाम देखने को मिलेंगे। शिक्षा विभाग इस दिशा में अनेक कदम उठा रहा है। 127 करोड़ रुपए की लागत से स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम बनाए जा रहे हैं। सरकार द्वारा निर्णय लिया गया है कि प्रदेश के सरकारी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों को निःशुल्क टेबलेट उपलब्ध कराए जाए।

डॉ. प्रदीप राठौर, जनसंपर्क अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय हरियाणा ने कहा कि तेजी से बदलती दुनिया के साथ शिक्षा का हाईटेक होना वक्त का तकाजा है। सामान्य कक्षाओं को स्मार्ट क्लास में परिवर्तित करने का कार्य चरणबद्ध चल रहा है।

कृष्ण मेहता, राजकीय प्राथमिक पाठशाला, सेक्टर-21 पंचकूला ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से अभिभावकों का सरकारी स्कूलों पर विश्वास बढ़ा है जिसकी वजह सरकारी स्कूलों में शिक्षा का बढ़ता स्तर और डिजिटल तकनीक है। स्मार्ट क्लासरूम से बच्चों के बैग का बोझ भी कम हुआ है।

क्रांति चावला, कार्यवाहक मुख्य शिक्षक, फतूपुर राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कुरुक्षेत्र ने कहा कि यह प्रोजेक्ट सरकारी स्कूलों के लिए वरदान साबित हो रहा है। स्मार्ट बोर्ड विशेषतौर पर प्राइमरी के विद्यार्थियों के लिए बहुउपयोगी है, चित्रों और वीडियो के माध्यम से बच्चे आसानी से सीख रहे हैं।

जितेंद्र शर्मा, प्रिंसिपल, राजकीय सीनियर सकैंडरी स्कूल, बटोर, पंचकूला ने कहा कि स्मार्ट क्लासरूम होने से स्कूल में बच्चों की संख्या दो से तीन गुणा बढ़ी है। शिक्षक द्वारा कक्षा में पढ़ाया जाने वाला पाठ रिकॉर्ड हो जाता है, जिसे कभी भी विद्यार्थियों को दिखाया व सुनाया जा सकता है।

वंदना आर्य, विद्यार्थी, कक्षा बारहवीं, राजकीय सीनियर सेकेंडर स्कूल, बटोर पंचकूला ने बताया कि मै 12वी कक्षा वाणिज्य संकाय से कर रही हूं। यह ऐसा विषय है जो टीचर के समझाए बिना ज्ञात नहीं हो सकता। स्मार्ट क्लासरूम से कक्षा की बोरियत कम हुई है तथा सीखने की ललक बढ़ी है।

विनाथी, विद्यार्थी, कक्षा बारहवीं, राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बटोर ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान स्कूल बंद हो गए। लेकिन शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन क्लास ली गई। शिक्षक स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से हमें वर्चुअल पढ़ाते थे। ऑडियो-वीडियो से सलेब्स जल्द समझ में आ जाता है।

सरस्वती के किनारे बसा गांव खेड़ी मारकंडा

थानेसर तहसील का गांव खेड़ी मारकंडा सरस्वती नदी के किनारे पर बसा है। समय के चलते गांव कुरुक्षेत्र शहर से बिल्कुल सट चुका है। बताया जाता है कि बाबा मारकंडा ने लगभग 400 साल पहले यहां तप किया था। बाबा मारकंडा के नाम पर मारकंडेश्वर का मंदिर है।

प्रदेश में बाबा मारकंडा की बहुत मान्यता है। गांव के बुजुर्गों के अनुसार पहले गांव का नाम खेड़ी था। खेड़ी गांव को जाने वाला रास्ता बाबा मारकंडेश्वर मंदिर से होकर जाता था। इसलिए बाद में गांव को खेड़ी मारकंडा कहा जाने लगा।

सरस्वती नदी के तट पर बना हुआ घाट एतिहासिक है। गांव के 72 वर्षीय बुजुर्ग सोमनाथ का कहना है कि गांव ज्यादा प्राचीन तो नही है, लेकिन गांव ने कम समय में अधिक विस्तार पाया है। बताते है यहां लगभग 150 वर्ष पूर्व कश्यप समाज के लोग आकर बसे, बाद में यहां सभी जातियों के लोग रहने लगे। सभी भाईचारे के साथ रहते है। गांव के आस-पास प्रतापगढ़, रत्नहेरा, मझाड़ा गांव हैं। ये गांव भी शहरी आबोहवा से अछूते नहीं है।

लगभग 7 हजार की आबादी व 3200 मतदाताओं वाला गांव खेड़ी मारकंडा ने बहुत कम समय में ही काफी विस्तार पाया है। गांव कुरुक्षेत्र नए बस अड्डे के बिल्कुल सामने कुछ ही मीटर के फासले पर पड़ता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के टावर तकनीकी युग का दृश्य पेश करते हैं। छोटे छोटे बाजार बन चुके हैं। दैनिक जरूरत से लेकर शादी समारोह तक के सामान गांव की दुकानों से मिल जाते हैं।

सरस्वती कॉलोनी व डी.डी कॉलोनी नामक कालोनियां है। गांव में एक चौपाल, दो आंगनबाड़ी केंद्र, 8वीं तक का सरकारी स्कूल व दो नीजि स्कूल, एक नीजि बीएड कॉलेज, दो जलघर व 14 एकड़ पंचायती भूमि है।

शहर कुरुक्षेत्र को विस्तारित करने में गांव मारकंडा का काफी योगदान है। गांव की ज्यादातर जमीन में शहर बस चुका है। सरस्वती कॉलोनी व डी.डी कालोनी भी गांव की जमीन में ही बनी हैं। गांव में सबसे बड़ी समस्या स्वच्छता की है। गांव में सफाई व्यवस्था सुचारू नहीं है। गांव में सफाई व्यवस्था की खासी दरकार है।

-मनोज चौहान

राष्ट्रीय राजमार्गों का एक्सरे किया जाएगा। केंद्र सरकार की नई तकनीकी योजना के तहत मिलने वाली एक्सरे रिपोर्ट के आधार पर मार्गों को दुरुस्त करने व निर्माण करने के लिए सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ भावी योजनाएं बनाएंगे।

फ्रांस से भारत पहुंचे चार और राफेल विमान। युद्धक विमानों की पांचवी खेप के साथ भारतीय वायुसेना के पास 18 राफेल विमान हो चुके हैं। 18 विमानों की पहली स्क्वाड्रन को अंबाला एयरबेस पर तैनात किया जाएगा।

स्वच्छ पर्यावरण से मिलती है आक्सीजन

कोरोना ने एक बार फिर आक्सीजन की अहमियत की याद दिलाई है। मेडिकल आक्सीजन की कमी से संक्रमितों की मौत होने की खबरें हैं और आक्सीजन की चोरी होने की खबरें भी हैं। चारों ओर आक्सीजन को लेकर अफरातफरी का माहौल है। साफ जाहिर हो गया है कि मानव जीवन के लिए आक्सीजन अत्यंत आवश्यक तत्व है। आक्सीजन पर्यावरण का एक अहम हिस्सा है जबकि पर्यावरण को लेकर मानव उतना जागरूक नहीं है जितना होना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण में 'त्रिवेणी' का विशेष महत्व है जिसमें नीम, बरगद व पीपल के पेड़ होते हैं। ये पेड़ आक्सीजन प्रचूर मात्रा में प्रदान करते हैं। पीपल का पेड़ एक दिन में सबसे ज्यादा आक्सीजन का स्राव करता है। एक अनुमान के मुताबिक बरगद का 200 साल पुराना पेड़ हर रोज 250 लीटर आक्सीजन गैस प्रदान करता है।

प्रकृति से ऐसे मिलती है आक्सीजन

पेड़ पौधे धूप की मौजूदगी में कार्बनडाइआक्साइड और पानी का इस्तेमाल कर ग्लूकोज पैदा करते हैं। इस प्रक्रिया में बड़े पैमाने पर आक्सीजन गैस का स्राव होता है। ऊर्जा के लिए ग्लूकोज को विघटित करने की प्रक्रिया में वे आक्सीजन का इस्तेमाल भी करते हैं, इसकी मात्रा उनमें उत्पादित आक्सीजन से बेहद कम होती है। पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक प्रकाश संश्लेषण के दौरान ग्लूकोज का एक अणु पैदा करने में कार्बनडाइआक्साइड के छह अणुओं का इस्तेमाल होता है, इस प्रक्रिया में आक्सीजन के छह अणु वातावरण में घुलते हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्प लें : सीएम

मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाएं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के चलते वैश्विक स्तर पर हमारे पर्यावरण पर दिन-प्रतिदिन प्रतिकूल प्रभाव पड़ता जा रहा है। इससे बचने के लिए हमें जल संरक्षण करना होगा व पर्यावरण प्रदूषण को रोकना होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्बन उत्सर्जन को रोकना, जलवायु साक्षरता अभियान चलाना, धरती की क्षमता बढ़ाने वाली खेती पर बल देना, विलुप्त हो रहे जीव-जंतुओं का संरक्षण, कोरोना काल में प्लास्टिक प्रदूषण कम करने जैसे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प लेना होगा।

पर्यावरण में आए असंतुलन के अनेक कारण हैं जिनकी वजह से हवा में आक्सीजन की मात्रा कम हो रही है। पर्यावरण के बचाव के लिए प्रदूषण के विभिन्न स्रोतों पर रोक लगाने के साथ साथ पेड़ लगाना और जल संरक्षण पर ध्यान देना निहायत जरूरी हो गया है। हरियाणा सरकार की ओर से इन क्षेत्रों में विशेष कार्य हो रहा है। न केवल जल संरक्षण पर कई योजनाएं शुरू की गई हैं बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ों की संख्या बढ़ाने का भी प्रयास किया जा रहा है।

प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने का अवसर

हवा, पानी व धूप की निश्चित सीमाएं नहीं होती। प्रकृति की ये आवश्यक सेवाएं हैं। इनके बिना जीवन संभव नहीं है। ये प्राणी जगत को शाश्वत जरूरतें हैं। इन्हीं की बदौलत सांसें हैं, हम सब हैं और समस्त जगत जीवन है।

जिस प्रकार इस ब्रह्मांड के ग्रह, चांद-तारे एक संतुलन में गतिमान हैं उसी प्रकार पृथ्वी का जीवन भी संतुलनबद्ध है। मौसम व ऋतुएं भी इसी संतुलन का हिस्सा हैं। पेड़ पौधे व समस्त प्राणियों का सार्वभौमिक अस्तित्व है, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में सभी एक दूसरे के पूरक हैं।

किन्हीं वजहों से जब संतुलन में तनिक हलचल हो जाती है तो प्रकृति में उसका प्रतिकार स्पष्टतया महसूस किया जाता है। प्रतिकार के रूप में कोई आपदा हो सकती है, कोई महामारी भी हो सकती है।

वर्तमान समय में वैश्विक महामारी कोरोना की वजह से पूरी मानव जाति स्तब्ध है। चीन के वुहान प्रांत से निकली इस महामारी का स्थाई उपचार अभी तक कोई नहीं बताया जाता। इससे बचने के रास्ते तलाशे जा रहे हैं। जिनमें से एक है सावधानी। लगभग हर राष्ट्र में इस तरह की स्थिति से बचने के लिए एहतियात बरती जा रही है। सोशल डिस्टेंस के जरिए इस वायरस से बचा जा सके। वैक्सीनेशन का कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है।

पहली बार लगे लॉकडाऊन के बाद पर्यावरण में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा जा रहा था। महामारी बेशक पीड़ा देने वाली है, लेकिन पर्यावरण में बदलाव सुखद अनुभूति कराने वाला था। लॉकडाऊन नहीं होता तो शायद इस अनुभूति का साक्षात्कार नहीं होता। पर्यावरण सुधार व नदियों की सफाई के जो कार्य करोड़ों-अरबों खर्च करने से नहीं हो रहे थे वे इस दरमियान हुए।

उम्मीद लगाई जा रही है कि कोरोना की त्रासदी बीत जाने के बाद जीने के तौर तरीके बदल जाएंगे। हर राष्ट्र के लिए यह अवसर है, प्रकृति के साथ संतुलन बनाने के लिए चिंतन करने का। पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे।

-मनोज प्रभाकर

पशु पक्षियों का संरक्षण

प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने के लिए पशु-पक्षियों के संरक्षण पर भी ध्यान देना होगा। हरियाणा प्रांत के विभिन्न हिस्सों में वन्य जीवन रचा बसा है। संरक्षित व असंरक्षित क्षेत्रों में तेंदुओं के अलावा हिरण, सांभर, नीलगाय, गीदड़ व सैंकड़ों प्रजाति के पक्षी निर्वाहन कर रहे हैं।

इन सभी प्राणियों के संरक्षण के लिए राज्य सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। सुरक्षात्मक चारदिवारी के अलावा उनके आहार व पेयजल की व्यवस्था की गई है। गर्मी के दिनों में जलापूर्ति के लिए छोटे छोटे जलाशय बनाए गए हैं। मोरनी वन क्षेत्र में जगह जगह पानी के पक्के खाल बनाए गए हैं। अन्य खुले जंगलों में भी पाइपलाइन के जरिए पानी की आपूर्ति की जा रही है।

राज्य सरकार की ओर से हर वर्ष पेड़ लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। इस बार भी यह लक्ष्य रखा गया है ताकि पर्यावरण को तेजी से सुधारा जा सके। न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि वन्य प्राणियों के जीवन के लिए भी वनों की अधिकता आवश्यक है। राज्य सरकार की ओर से वन क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए अनेक कदम उठाए हैं। अवैध कटान पर सख्त प्रतिबंध है।

उद्यान

क्षेत्र में पर्यावरण दूषित करने वाली कोई भी फैक्ट्री नहीं लगाई जा सकती। माइनिंग नहीं की जा सकती। वनों की कटाई नहीं की जा सकती, दो मंजिला भवन नहीं बनाया जा सकता है तथा कृषि क्षेत्र की जलापूर्ति के लिए अगर ट्यूबवैल लगाया जाना है तो उसकी गहराई 100 मीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

वन्य संरक्षित क्षेत्र

राष्ट्रीय उद्यान:

1. गुरुग्राम से 15 किलोमीटर दूर फरुखनगर मार्ग पर 142.50 हेक्टेयर में फैला है सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान।
2. छछरौली से 25 किलोमीटर दूर पौंटा साहिब मार्ग पर 4682.32 हेक्टेयर में फैला है राष्ट्रीय कलेसर उद्यान

अभ्यारण्य क्षेत्र

1. राष्ट्रीय उद्यान के अलावा कलेसर वन्य जीव अभ्यारण्य भी इसी क्षेत्र में बनाया गया है जिसका क्षेत्र 5435.72 हेक्टेयर।
2. पिंजौर से आठ किलोमीटर दूर मल्हा मार्ग पर 767.30 हेक्टेयर में बीर शिकारगाह वन्य जीव अभ्यारण्य
3. कुरुक्षेत्र के पीर सयैदा गांव से दस किलोमीटर दूर 28.92 हेक्टेयर में फैला है छिलछिला वन्य जीव अभ्यारण्य
4. रेवाड़ी के कोसली से पांच किलोमीटर दूर 211.11 हेक्टेयर में स्थित है नाहड़ वन्य प्राणी विहार।
5. सिरसा के डबवाली से 10 किलोमीटर दूर संगरिया मार्ग पर 11530. 56 हेक्टेयर में फैला है अबूबशहर वन्य जीव अभ्यारण्य
6. झज्जर से 15 किलोमीटर दूर कासनी मार्ग पर 411.55 हेक्टेयर में स्थित है भिंडावास वन्य प्राणी विहार
7. झज्जर के ही गांव छुछकवास से आठ किलोमीटर दूर स्थित खापरवास वन्य प्राणी अभ्यारण्य क्षेत्र।
8. पंचकुला से मोरनी तक 2226. 56 हेक्टेयर वर्ग क्षेत्र में खोल हाय रायतन वन्य प्राणी विहार स्थित है। इस क्षेत्र में केवल मालिकाना हक वाली भूमि में ही कृषि की अनुमति है। पचास मीटर तक ट्यूबवैल लगाया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी प्रकार की माइनिंग या पेड़ों का कटान वर्जित है।

> पर्यावरण संरक्षण की श्रृंखला में स्वच्छ भारत अभियान ने क्रांति का रूप ले लिया है। हरियाणा में कचरे को अलग करने और पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इस अभियान के तहत, हरियाणा के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र खुले में शौच मुक्त हो गए हैं। उन्होंने कहा कि 'हर घर हरियाली योजना' और 'पौधगिरी योजना' के कार्यान्वयन के अलावा वन क्षेत्रों में वनों की कटाई और फसल अवशेषों को जलाने से रोकने के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं।
>
> इसके अलावा, 'मेरा पानी मेरी विरासत' योजना के तहत, किसानों से पानी बचाने के लिए धान के बजाय अन्य फसलों का उत्पादन करने का भी आग्रह किया गया है।
>
> मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल, हरियाणा

हरियाणा का यह एक मात्र वन क्षेत्र है जहां तेंदूए, नील गाय, हिरण, सूअर, बंदर, तीतर व अन्य सैंकड़ों प्रजाति के पक्षी पाए जाते हैं।

हरियाणा में इनके अलावा कुरुक्षेत्र व जींद में संरक्षित क्षेत्र बनाए गए हैं। इनमें कुरुक्षेत्र व कैथल जिला क्षेत्र के 4452.8 5 हेक्टेयर में सरस्वती वन्य जीव अभ्यारण्य तथा पेहवा से दस किलोमीटर दूर 419.26 हेक्टेयर क्षेत्र में बीर बारा बन वन्य जीवन अभ्यारण्य स्थित है।

-मनोज प्रभाकर

जीवन का आधार वृक्ष हैं

जीवन का आधार वृक्ष हैं,
धरती का श्रृंगार वृक्ष है।
प्राणवायु दे रहे सभी को,
ऐसे परम उदार वृक्ष हैं।
ईश्वर के अनुदान वृक्ष है,
फल-फूलों की खान वृक्ष है।
मूल्यवान औषधियां देते,
ऐसे दिव्य महान वृक्ष हैं।
देते शीतल छांव वृक्ष हैं,
रोकें थकते पांव वृक्ष है।
लाखों जीव बसेरा करते,
जैसे सुंदर गांव वृक्ष हैं।
जनजीवन के साथ वृक्ष है,
खुशियों की बारात वृक्ष हैं।
योगदान से इस धरती पर,
ले आते वरदान वृक्ष हैं।
जीव-जगत की भूख मिटाते,
ये सुंदर फलदार वृक्ष हैं।
जीवन का आधार वृक्ष हैं,
धरती का श्रृंगार वृक्ष हैं।

साभार - देवपुत्र

डॉ अमित अग्रवाल, भा.प्र.से. प्रबंध निदेशक, संवाद (सूचना जन संपर्क एवं भाषा विभाग) हरियाणा द्वारा हरियाणा सरकार के लिए कमरा नं. 314, दूसरी मंजिल, लघु सचिवालय, सेक्टर-1, पंचकूला से प्रकाशित।
कार्यालय : संवाद सोसायटी एससीओ 23, पहली मंजिल, सेक्टर 7, चंडीगढ़ फोन : 0172-2723814, 2723812 email : editorsamvad@gmail.com